Student's Copy

Essay

निबंध

Time : 3 Hours] [Full Marks: 300

70th BPSC MAINS TEST SERIES 2025

Test No.: 05 Date: 01.02.2025

Section-1

खंड -1

Write an essay on any one of the following topics in about 700 to 800 words: 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए:

1. Impact of technology on Indian society.

   भारतीय समाज पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

2. Meaning of One Nation One Election

   एक देश एक चुनाव के मायने

Section-2

खंड -2

Write an essay on any one of the following topics in about 700 to 800 words: 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए:

1. Modern life cannot be governed by traditional morality.

   पारंपरिक नैतिकता आधुनिक जीवन का मार्गदर्शन नही कर सकती।

2. On the 76th Republic Day, what did we accomplish?

   हमने 76 वें गणतंत्रा पर क्या पाया?

(Turn Over)

Copyright@ Bihar Naman Publication

Bihar Naman GS
Add.- 3rd Floor A.K. Pandey Building. Road No.2 (Near Dinkar Golambar)
Rajendra Nagar, Patna-16, www.biharnaman.in, biharnaman@gmail.com, Ph. 8368040065

Section-3

खंड -3

Write an essay on any one of the following topics in about 700 to 800 words: 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए:

1. Arkal Kheti Tarkal Jaae, Daiv Karsoo ta Mooh Men Jaai.

   अड़कल खेती तड़कल गाइ, दइव करसु त मुंह में जाइ

2. Larika Thakur Budh Divan, Mamla Bigde Saanjh Bihan.

   लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान, ममला बिगरे सांझ बिहान

*****

Copyright@ Bihar Naman Publication

(Continued)

Bihar Naman GS
Add.- 3rd Floor A.K. Pandey Building. Road No.2 (Near Dinkar Golambar)
Rajendra Nagar, Patna-16, www.biharnaman.in, biharnaman@gmail.com, Ph. 8368040065

Bihar Naman GS
An Institute For UPSC & BPSC

SCHEDULE

Follow Us:-
www.biharnaman.in

Test - 01	05.01.2025	Modern History, Culture of Bihar and Philosophical Thought
Test - 02	12.01.2025	Political System of India & Bihar
Test - 03	19.01.2025	Data Interpretation
Test - 04	25.01.2025	Geographical and Economical Aspects of India & Bihar
Test - 05	01.02.2025	Essay - 1
Test - 06	02.02.2025	Science and Technology, Recent Development of ISRO and DRDO
Test - 07	09.02.2025	International Relations and Current Burning Issues of National and International Interest
Test - 08	16.02.2025	GS PAPER - 1 (Complete / Full Syllabus)
Test - 09	22.02.2025	Essay - 2
Test - 10	23.02.2025	GS PAPER - 2 (Complete / Full Syllabus)
Test - 11	02.03.2025	GS PAPER - 1 (Complete / Full Syllabus)
Test - 12	08.03.2025	Essay - 3
Test - 13	09.03.2025	GS PAPER - 2 (Complete / Full Syllabus)
Test - 14	21.03.2025	GS PAPER - 1 (Complete / Full Syllabus)
Test - 15	22.03.2025	GS PAPER - 2 (Complete / Full Syllabus)
Test - 16	23.03.2025	Essay - 4

Copyright@ Bihar Naman Publication

Bihar Naman GS
Add.- 3rd Floor A.K. Pandey Building. Road No.2 (Near Dinkar Golambar)
Rajendra Nagar, Patna-16, www.biharnaman.in, biharnaman@gmail.com, Ph. 8368040065

05/FH/CC/M-2025-**01**

Test No.: 05 Date: 01.02.2025

बि. लो. से. आ.	B.P.S.C

परीक्षार्थी के लिए आवश्यक अनुदेश

इन्हें सावधानी से पढ़े और इसका अनुपालन करें, अन्यथा दंड के भागी होंगे।

1. इस उत्तर पुस्तिका में (52) क्रमांकित पृष्ठ है। इसका सत्यापन कर लें। त्रुटि/कमी होने पर उत्तर पुस्ती बदलवा लें।
2. प्रवेश पत्र से मिलान कर केवल इस आवरण पृष्ठ पर विहित स्थान पर 'अपना नाम एवं अनुक्रमांक' [Enrollment Number] अंतर्राष्ट्रीय अंको तथा अक्षरों में लिखें। परीक्षा और विषय का नाम भी नियत स्थानों पर लिखें ।
3. अनुक्रमांक के सभी अंक अलग-अलग भाग बॉक्स में लिखे। 'शब्दों' में प्रत्येक अंक ठीक उसके नीचे, लम्बे बॉक्स में अक्षरवार 1 2 क ख लिखे।
4. उत्तर पुस्तिका के अन्दर किसी पृष्ठ पर प्रश्नोत्तर के अलावा अपना नाम, अनुक्रमांक, अन्य कोई [धार्मिक] शब्द या पहचान चिन्ह नहीं लिखे अन्यथा उत्तर पुस्तिका रद्द कर दी जायगी।
5. उत्तर पुस्तिका के दोनों तरफ लिखें। पुस्तिका के शेष बचे सभी सादे पृष्ठों (अंश सहित) को पूरी तरह क्रॉस [×] कर दें।
6. अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका नहीं दी जाएगी।
7. दाहिनी ओर विहित घेरा में उत्तरित प्रश्न की क्रम संख्या के सामने उसकी पृष्ठ संख्या लिखे।
8. उपस्थिति पत्र पर प्रत्येक परीक्षा के लिए वही हस्ताक्षर करे जो उपस्थिति पत्र पर आपने पूर्व में किया है। अन्यथा उत्तर पुस्तिका रद्द कर दी जाएगी।
9. प्रश्नों के उत्तर एक ही स्याही में लिखे। यदि स्याही बदलनी पड़े तो इस आशय का निरीक्षक (Invigilator) से आवारण पृष्ठ पर नियत स्थान पर अभिप्रमाणन अवश्य करायें।
10. यदि आप किसी प्रश्नोत्तर को रद्द करना चाहें तो आर-पार क्रॉस कर [×] काट दे तथा उसपर रद्द लिखें।
11. प्रश्नोत्तर निदेशानुसार ही दें। यदि निर्धारित संख्या से अधिक प्रश्नोत्तर अंकित पाये जायेंगे, तब आरंभ में निर्धारित संख्या तक आने वाले प्रश्नोत्तर ही मूल्यांकित किये जायेंगे और शेष की उपेक्षा कर दी जायेगी।
12. एक प्रश्न का उत्तर पूरा लिखने के बाद ही दूसरा प्रश्नोत्तर लिखे।
13. कम्प्यूटर उपस्थिति सूची में अपने नाम के समक्ष उत्तरपुस्ती की संख्या अवश्य लिखे और हस्ताक्षर करें अन्यथा उत्तर पुस्ती रद्द कर दी जायेगी।
14. पुस्तक/कुंजी/नोट्स आदि परीक्षा कक्ष से बाहर निर्धारित स्थान पर ही रखें।
15. परीक्षा कक्ष में यदि कोई पुस्तक/उत्तर सामग्री आपसे बरामद होगी या आप नकल करते/कराये/बातचीत करते/दुर्व्यवहार करते पाये गये तो परीक्षा कक्ष से तत्क्षण बहिस्कृत किये जायेगें; आयोग द्वारा अतिरिक्त रूप से भी दंडित किये जा सकेंगे और बिहार परीक्षा संचालन अधिनियम 1985 के उपबंधों के अधीन दंडित किये जा सकेंगे।
16. उत्तर पुस्ती सौंप कर/ले लिये जाने के बाद ही परीक्षा कक्ष से बाहर निकले।
17. परीक्षा कक्ष में मोबाईल फोन वर्जित है।
18. केन्द्राधीक्षक के निर्देशो का पालन करना अनिवार्य है।

परीक्षा
EXAM. ____________

विषय
SUB. ____________

तिथि
DATE. ____________

प्रश्न संख्या Q.No.	उत्तर की पृष्ठ संख्या Pg. No. of Answer	प्राप्तांक Marks Obtained
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		
7.		
8.		
9.		
10.		
11.		
12.		
13.		
14.		
15.		
16.		
17.		
18.		
19.		
20.		
कुल [अंको में] TOTAL [IN FIGURES]		
कुल [शब्दों में] TOTAL [IN WORDS]		

परीक्षक
EXAMINER

प्रधान परीक्षक
HEAD EXAMINER

B

70202328

Section-1

खंड -1

Write an essay on any one of the following topics in about 700 to 800 words: 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए:

1. Impact of technology on Indian society.

   भारतीय समाज पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

2. Meaning of One Nation One Election

   एक देश एक चुनाव के मायने

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

Essay

Bihar Naman Publication, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

70th BPSC Mains Test Series
Bihar Naman GS, Patna
निबंध

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Essay

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

Essay

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

Section-2

खंड -2

Write an essay on any one of the following topics in about 700 to 800 words: 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए:

1. Modern life cannot be governed by traditional morality.

   पारंपरिक नैतिकता आधुनिक जीवन का मार्गदर्शन नही कर सकती।

2. On the 76th Republic Day, what did we accomplish?

   हमने 76 वें गणतंत्रा पर क्या पाया?

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Bihar Naman Publication, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Bihar Naman Publication, Patna
©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

Essay

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

Section-3

खंड -3

Write an essay on any one of the following topics in about 700 to 800 words: 100

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए:

1. Arkal Kheti Tarkal Jaae, Daiv Karsoo ta Mooh Men Jaai.

   अड़कल खेती तड़कल गाइ, दइव करसु त मुंह में जाइ

2. Larika Thakur Budh Divan, Mamla Bigde Saanjh Bihan.

   लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान, ममला बिगरे सांझ बिहान

Bihar Naman Publication, Patna

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

निबंध

Bihar Naman Publication, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Bihar Naman Publication, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin
70th BPSC Mains Test Series
Bihar Naman GS, Patna

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Bihar Naman Publication, Patna

Essay

Bihar Naman Publication, Patna

70th BPSC Mains Test Series

Bihar Naman GS, Patna

Bihar Naman Publication, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

प्रश्न संख्या लिखिए Write Question Number in this margin

Bihar Naman Publication, Patna

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna-800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

मॉडल उत्तर पुस्तिका

70th BPSC

मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज 2025

हिंदी माध्यम

विषय- निबंध

टेस्ट संख्या - 05

Date- 01.02.2025

Section-1

खंड -1

निबंध का शीर्षक: 1. भारतीय समाज पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

प्रस्तावना

आपने एक कहावत तो सुना ही होगा कि-

"Innovation distinguishes between a leader and a follower."/ *नवाचार ही नेता और अनुयायी में अंतर करता है।*

यह कहावत बताती है कि तकनीकी नवाचार ही प्रगति और नेतृत्व का आधार है। आधुनिक दुनिया में प्रौद्योगिकी जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है। लोग टेक्नोलॉजी पर इतने निर्भर हो गए हैं कि इसके बिना रह ही नहीं पाते। प्रौद्योगिकी आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। इसने संचार और परिवहन को तेज़ और आसान बनाकर जीवन को आसान और आरामदायक बना दिया है। इसने शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बना दिया है और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया है। प्रौद्योगिकी ने दुनिया को छोटा और रहने के लिए बेहतर जगह बना दिया है। प्रौद्योगिकी के बिना मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करना एक कठिन कार्य होगा। प्रौद्योगिकी के आगमन से पहले, मनुष्य अभी भी अपनी जरूरतों को पूरा कर रहा था। हालाँकि, प्रौद्योगिकी के साथ, ज़रूरतों की पूर्ति आसान और तेज़ हो गई है। यह अकल्पनीय है कि तकनीक के बिना जीवन कैसा होगा। प्रौद्योगिकी निम्नलिखित क्षेत्रों में उपयोगी है: परिवहन, संचार, संपर्क, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और व्यवसाय। इसके लाभों के बावजूद, प्रौद्योगिकी का समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रौद्योगिकी के नकारात्मक प्रभावों के उदाहरणों में स्टेम सेल अनुसंधान जैसी विवादास्पद चिकित्सा पद्धतियों का विकास और बातचीत के तरीकों में बदलाव के कारण एकांत को अपनाना शामिल है। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया ने लोगों के बातचीत करने के तरीके को बदल दिया है।

पिछले कुछ दशकों में प्रौद्योगिकी ने भारतीय समाज को आकार देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। पारंपरिक जीवन शैली से लेकर आधुनिक, डिजिटल दुनिया तक, भारत ने एक महत्वपूर्ण तकनीकी क्रांति देखी है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, अर्थव्यवस्था, शासन और सामाजिक संपर्क जैसे विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का प्रभाव

स्पष्ट है। जहाँ प्रौद्योगिकी ने कई लाभ लाए हैं, वहीं इसने डिजिटल विभाजन, गोपनीयता संबंधी चिंताएँ और साइबर खतरों जैसी कई चुनौतियाँ भी पेश की हैं। भारत में तकनीकी प्रगति का एक लंबा इतिहास है, जिसमें शून्य और आयुर्वेद की अवधारणा जैसे प्राचीन नवाचारों से लेकर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और आईटी में आधुनिक सफलताएँ गिनी जाती हैं। 1960 के दशक में हरित क्रांति और 1990 के दशक में आईटी बूम ने भारत की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है जिसमें आधुनिक प्रौद्योगिकी की बहुत बड़ी भूमिका है। 2015 में शुरू की गई डिजिटल इंडिया पहल ने तो पूरे देश में तकनीकी भाईचारा को और तेज़ कर दिया है।

आधुनिक समाज में प्रौद्योगिकी इतना गहरा हो गया है कि हम अपने विकास के विभिन्न चरणों में प्रौद्योगिकी के बगैर विकास की कल्पना ही नहीं कर सकते। आपने देखा होगा कि प्रौद्योगिकी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांति ला दिया है। पारंपरिक कक्षा शिक्षण अब डिजिटल लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और इंटरैक्टिव टूल के साथ भारत के गांव-गांव तक पहुंच चुका है। BYJU'S, Unacademy और Bihar Naman GS जैसे ऑनलाइन शैक्षणिक प्लेटफ़ॉर्म ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए घर बैठे सब कुछ का सीखना सुलभ बना दिया है। हां, एक बात जरूर है कि महामारी के कारण ऑनलाइन शिक्षा में बदलाव ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी की ताकत और कमजोरियों दोनों को हमारे सामने खड़ा कर दिया है। हम इसे डिजिटल डिवाइड के माध्यम से समझ सकते हैं। आप देखेंगे कि शहरी क्षेत्रों में लोगों के पास स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट तो है ही साथ में यहां इंटरनेट की गति भी बहुत तेज है जिस कारण से शहरी क्षेत्र में रहने वाले लोग तथा छात्र प्रौद्योगिकी की क्रांति से बहुत ज्यादा लाभान्वित हुए हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पास कम आए के कारण ना तो महंगे स्मार्टफोन होते हैं ना ही टैबलेट और ना ही लैपटॉप और इंटरनेट की व्यवस्था भारत के गांव में कितनी खराब है यह बात आपसे छुपी नहीं है जिस कारण से ग्रामीण क्षेत्र के वासी प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में बहुत पीछे छूट गए है।

प्रौद्योगिकी ने भारतीय समाज की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। TCS, Infosys और Wipro जैसी कंपनियों के नेतृत्व में IT और सॉफ़्टवेयर उद्योग ने भारत को वैश्विक प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में स्थापित किया है। बिहार का शहर पटना भी धीरे-धीरे आईटी हब बनते जा रहा है क्योंकि भारत के प्रमुख आईटी कंपनी के ऑफिस पटना में खुलने के बाद इस क्षेत्र में बहुत ज्यादा प्रगति हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), ब्लॉकचेन और ऑटोमेशन के आगमन ने नौकरी के नए अवसर खोले हैं, साथ ही नौकरी के विस्थापन के बारे में चिंताएँ भी बढ़ाई हैं। Amazon, Flipkart और Myntra जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म ने खुदरा उद्योग को बदल दिया है जिससे व्यवसायों को देश भर में ग्राहकों तक पहुँचने में मदद मिली है। UPI, Paytm और Google Pay जैसी डिजिटल भुगतान प्रणालियों ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है, जिससे नकद लेनदेन पर निर्भरता कम हुई है। अब तो हमारे गांव की 65 साल की बूढी दादी खिलखिलिया देवी भी सब्जी खरीदने के बाद सब्जी वाले को यूपीआई के माध्यम से भुगतान करती है। यह देखकर मन को बड़ा संतोष होता है कि हमारा देश बदल रहा है और हमारे देश के इस परिवर्तन के लिए प्रौद्योगिकी सबसे बड़ा कारक है।

प्रौद्योगिकी का समर्थन स्वास्थ्य क्षेत्र में भी क्रांतिकारी है, जिससे चिकित्सा सेवाओं की पहुँच, सामर्थ्य और गुणवत्ता में सुधार हुआ है। टेलीमेडिसिन, एआई-संचालित डायग्नोस्टिक्स और रोबोटिक सर्जरी ने रोगी की देखभाल और उपचार के परिणामों को बेहतर बनाया है। बिहार के आईजीआईएमएस में अब तो प्रौद्योगिकी से ही ऑपरेशन किया जाता है और ऐसी कई गंभीर बीमारियों का इलाज किया जाता है कि अब भारत के दूसरे राज्यों से हमारे बिहार पटना में इलाज करवाने के लिए लोग आते हैं। आरोग्य सेतु और CoWIN जैसे मोबाइल

एप्लिकेशन ने संपर्क ट्रेसिंग, टीकाकरण शेड्यूलिंग और स्वास्थ्य निगरानी को सक्षम करके COVID-19 महामारी के प्रबंधन में बड़ें अभिभावक की भूमिका निभाया है। इन प्रगति के बावजूद, उच्च लागत, बुजुर्गों में डिजिटल साक्षरता की कमी और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक असमान पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। शहरी और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के बीच की खाई को पाटना अभी भी सरकार के समक्ष गंभीर चुनौती बना हुआ है। प्रौद्योगिकी ने भारतीय सरकार को शासन में दक्षता, पारदर्शिता और पहुँच बढ़ाने में सक्षम बनाया है। आधार, ई-गवर्नेंस सेवाएँ और डिजिटल इंडिया अभियान जैसी पहलों ने प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया है, नौकरशाही और भ्रष्टाचार को कम किया है। उमंग, मायगॉव और डिजिलॉकर जैसे ई-गवर्नेंस पोर्टल ने आवश्यक सेवाओं तक आसान पहुँच की सुविधा प्रदान की है। ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणाली और डिजिटल भूमि रिकॉर्ड ने नागरिकों को सशक्त बनाया है। हालाँकि, जिम्मेदार डिजिटल शासन सुनिश्चित करने के लिए डेटा गोपनीयता, निगरानी और साइबर सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं को संबोधित किया जाना चाहिए।

भारत में प्रौद्योगिकी ने सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक प्रथाओं को गहराई से प्रभावित किया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने भौगोलिक सीमाओं के पार लोगों को जोड़ा है, जिससे वास्तविक समय में संचार और सूचना साझा करना आसान हो गया है। हालाँकि, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अत्यधिक निर्भरता ने मानसिक स्वास्थ्य, गोपनीयता भंग और गलत सूचना के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं। साइबरबुलिंग, फर्जी खबरें और ऑनलाइन कट्टरता महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में उभरी हैं। इसके अतिरिक्त, जबकि प्रौद्योगिकी ने डिजिटल अभिलेखागार और आभासी संग्रहालयों के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया है, इसने पारंपरिक मूल्यों और पारस्परिक संबंधों के क्षरण को भी बढ़ावा दिया है।

नकारात्मक की तुलना में प्रौद्योगिकी मनुष्यों या समाज पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह हमारे जीवन को आसान बनाता है और संसाधनों या उपकरण प्रदान करके हमें इनाम देता है जो हमारे जीवन को अधिक आसान बनाता है। हम कुछ उदाहरणों से इसे और स्पष्ट कर सकते हैं-

- बेहतर संचार: संचार समाज का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, हम संचार की मदद से एक दूसरे के साथ अपने विचारों का निर्माण या हस्तांतरित करते हैं। इससे पहले लोगों ने कबूतरों या पक्षियों को अपने संदेशों को अपने प्रियजनों को स्थानांतरित करने के लिए उपयोग किया था। उस तकनीक के बाद धीरे-धीरे बढ़ता है और जानकारी स्थानांतरित करने का माध्यम मोबाइल फोन, ईमेल इत्यादि में बदल जाता है। आजकल, हम ईमेल, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इत्यादि के माध्यम से प्रियजनों या ज्ञात लोगों को संदेश भेजते हैं। यह सबसे तेज़, कुशल और प्रभावी माध्यम है। लोग अपने प्रियजनों के साथ आसानी से बात कर सकते हैं या साझा कर सकते हैं, भले ही वे उनसे बहुत दूर हों।
- बेहतर शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया: प्रौद्योगिकी शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाती है। आजकल, लोग आसानी से इंटरनेट का उपयोग करके अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। इंटरनेट पर अधिकांश डेटा मौजूद है, और आप इस डेटा को किसी भी समय और कहीं भी एक्सेस कर सकते हैं।
- मशीनीकृत कृषि: प्रौद्योगिकी किसानों के कार्य तंत्र को बदलती है। कृषि क्षेत्र में कई मशीनें और तकनीकी उपकरण पेश किए गए थे जो खेती को बहुत आसान, प्रभावी, स्वचालित, आदि तक पहुंचने में आसान बनाता है।
- सूचना प्राप्त करने में सरलता: हम आसानी से इंटरनेट के माध्यम से किसी भी समय और कहीं भी जानकारी तक पहुंच सकते हैं। इंटरनेट पर मौजूद अधिकांश जानकारी निःशुल्क हैं, इसलिए आप उन्हें अपने ज्ञान, कौशल इत्यादि को बढ़ाने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

- ज्ञान का वैश्वीकरण: आज आप दुनिया भर के किसी भी देश से नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं। ट्विटर जैसी सेवाओं ने लोगों को पत्रकार बनने में सक्षम बनाया है, इसलिए वे ट्वीट करके तुरंत समाचार रिपोर्ट करते हैं। विकिपीडिया.ओआरजी जैसी सेवाएँ किसी भी चीज़ के बारे में डेटा से सुसज्जित हैं, हालाँकि हमेशा 100% सटीक नहीं होती हैं।
- बेहतर समाजीकरण : पुराने और नए दोस्त ढूँढना अब बहुत आसान हो गया है। फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल नेटवर्क से आप आसानी से समाजीकरण कर सकते हैं।
- सुलभ शिक्षा: इंटरनेट प्रौद्योगिकी के उपयोग ने संस्थागत सीमाएँ खोल दी हैं। विकासशील देशों के छात्रों के पास अब कुछ मामलों में प्रथम विश्व शिक्षा संस्थानों के समान मानक पर अपने वांछित पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने का मौका है। इस प्रकार की शिक्षा से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर रोजगार की संभावना बढ़ जाती है
- उत्पादन में वृद्धि और समय की बचत: व्यवसाय आज कार्यों को स्वचालित करने के लिए पहले से कहीं अधिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं।

एक अच्छा उदाहरण एक बेकरी है जो बेकरी में कमरे या ओवन के तापमान में गिरावट या वृद्धि का पता लगाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक तापमान सेंसर का उपयोग करता है। ये सेंसर किसी भी तापमान परिवर्तन की सूचना देते हुए सीधे ऑपरेटर को सूचना भेजते हैं। यह तापमान प्रणाली बेकरी का समय बचाती है, और इसके परिणामस्वरूप लगातार उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद भी मिलते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि इस ग्रह पर मौजूद हर चीज़ के फायदे और नुकसान दोनों हैं। यही बात प्रौद्योगिकी पर भी लागू होती है, इसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और कुछ नकारात्मक प्रभाव हैं:

- बेरोजगारी में वृद्धि: आजकल बड़े और छोटे व्यवसाय कम लागत और उच्च दक्षता के कारण मशीनरी और तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हैं जिसके कारण बेरोजगारी की दर लगातार बढ़ रही है।
- प्रदूषण में बढ़ोतरी: सिर्फ इंसान ही नहीं बल्कि तकनीक भी हमारे पर्यावरण पर असर डाल रही है. वाहनों और मशीनरी के कारण प्रदूषण की दर लगातार बढ़ रही है जो ग्लोबल वार्मिंग आदि का कारण बनती है।
- स्वास्थ्य और मानसिक चिंताओं में वृद्धि: आजकल, प्रौद्योगिकी मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल रही है। यह लोगों को आलसी, भावनात्मक रूप से कमजोर, नींद की समस्या, शारीरिक गतिविधि कम कर देता है, साथ ही लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ कम समय बिता रहे हैं।
- साइबर अपराधों में वृद्धि: इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग के कारण साइबर अपराधों की दर में भी वृद्धि हुई है। कुछ लोग (हमलावर) पैसे या मनोरंजन के लिए निर्दोष लोगों (पीड़ितों) या बच्चों को नुकसान पहुंचाते हैं।
- ऑनलाइन खराब गुणवत्ता वाले प्रकाशन: कई ऑनलाइन प्रकाशक मौद्रिक उद्देश्यों के लिए सामग्री पोस्ट करते हैं, इसलिए आप पाएंगे कि ऑनलाइन प्रकाशित अधिकांश सामग्री छात्रों और शोधकर्ताओं की मदद के लिए सटीक या विस्तृत नहीं है।
- सूचना पर अत्यधिक निर्भरता: छात्रों को अब समीकरणों और शोध विषयों को हल करने में समय नहीं लगता है। वे बस Google या कैलकुलेटर पर एक प्रश्न पूछते हैं और उत्तर ढूंढ लेते हैं। इन उपकरणों के बिना, वे नहीं जान पाएंगे कि पुस्तकालय या कागज पर समान परिणाम कैसे प्राप्त किए जाएं।

- नौकरी से बहिष्कार: प्रौद्योगिकी ने उन कई पदों को प्रतिस्थापित कर दिया है जिन पर मनुष्य रहा करते थे। सॉफ़्टवेयर अब संपूर्ण लेखांकन कर रहा है, इसलिए प्रशिक्षित लेखाकारों के पास कम अवसर हैं; रोबोट लॉन काट सकते हैं या पूल साफ कर सकते हैं, किसी नौकर की जरूरत नहीं।
- कार्यान्वयन व्यय: छोटे व्यवसाय कभी-कभी महंगी कोर प्रौद्योगिकी को वहन करने और बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं, इसलिए वे अपने ग्राहकों को एक ऐसी कंपनी के हाथों खो देते हैं जिसके पास उद्योग में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक पूंजी और संसाधन होते हैं।
- सुरक्षा उल्लंघन: चूंकि व्यवसाय अपना डेटा दूरस्थ क्लाउड सर्वर पर संग्रहीत करते हैं, जिसे उपयोगकर्ता नाम और पासवर्ड के साथ ऑनलाइन एक्सेस किया जा सकता है, इसलिए वे संभावित रूप से उस डेटा को हैकर्स या वायरस के हाथों खोने का जोखिम उठाते हैं।

उपसंहार

प्रौद्योगिकी ने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया है, अभूतपूर्व प्रगति लाते हुए नई चुनौतियाँ भी पेश की हैं। इसका प्रभाव शिक्षा, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य सेवा, शासन और सामाजिक संबंधों तक फैला हुआ है, जो भारतीयों के रहने और काम करने के तरीके को आकार देता है। जैसे-जैसे भारत डिजिटल परिवर्तन को अपनाता जा रहा है, उसे एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जो प्रौद्योगिकी के लाभों को अधिकतम करते हुए इसके जोखिमों को कम करे। सही नीतियों और नैतिक विचारों के साथ, प्रौद्योगिकी भारत को एक समृद्ध और समावेशी समाज बनाने में एक शक्तिशाली उपकरण हो सकती है।

निबंध का शीर्षक: 2. एक देश एक चुनाव के मायने

प्रस्तावना

"Bad leaders are elected when good citizens don't vote." / जब अच्छे नागरिक वोट नहीं देते, तो बुरे नेता चुने जाते हैं।

यह पंक्ति इस बात को संदर्भित करता है कि भारत में जो परिवर्तन हुआ है- 'एक देश एक चुनाव' उसमें इस बात की संभावना रहेगी कि हम अच्छे नागरिक का दायित्व निभाए और अपने लिए साफ छवि वाले नेता को चुने। भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के नाते, चुनावी प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। पिछले सात दशकों में चुनावी प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और कुशल बनाने के लिए कई संशोधन किए गए हैं। वर्तमान में, एक नई चुनावी व्यवस्था के निर्माण पर व्यापक चर्चा हो रही है जिसे "एक राष्ट्र एक चुनाव" के नाम से जाना जाता है। इस अवधारणा के समर्थक मानते हैं कि यह देश में चुनावी प्रक्रिया को सरल और अधिक प्रभावी बना सकती है। उनका तर्क है कि वर्तमान चुनावी व्यवस्था में राजनीतिक दल, चुनाव आयोग, और प्रशासनिक तंत्र अत्यधिक समय और संसाधनों का व्यय करते हैं। इसके अतिरिक्त, बार-बार होने वाले चुनावों से शिक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न होता है।

भारत में चुनाव, जनता को अपने प्रतिनिधियों को चुनने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया पिछले सात दशकों से चली आ रही है, लेकिन इसमें कुछ खामियां हैं। "एक राष्ट्र एक चुनाव" का उद्देश्य इन खामियों को दूर करना और एक अधिक सुव्यवस्थित चुनावी प्रणाली स्थापित करना है। एक राष्ट्र एक चुनाव का तात्पर्य है भारत के सभी राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों की विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ कराना। अर्थात, ये सभी चुनाव 5 साल में एक बार ही हों। या यूँ कहें कि भारत को मध्यावधि चुनावों

और बार-बार होने वाले चुनावों से मुक्त करना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के राजनीतिक दल इस विचार का समर्थन कर रहे हैं। भारत में एक राष्ट्र एक चुनाव का विचार पूर्णतः नया नहीं है। आजादी के बाद 1952, 1957, 1962 और 1967 में सभी राज्यों की विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ ही हुए थे। इससे ज्ञात होता है कि देश की शासन, प्रशासनिक और अन्य सभी प्रणालियों को एक राष्ट्र एक चुनाव का अनुभव है।

1967 के आम चुनाव के बाद भारत में एक नया राजनीतिक दौर शुरू हुआ था। 1968-69 में अनेक राज्यों की विधानसभाएं समय से पहले बर्खास्त कर दी गईं थी। इनमें अधिकतर गैर-कांग्रेसी शासित राज्य या कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व का विरोध करने वाले कांग्रेसी शासित राज्य भी शामिल थे। राजनीतिक स्वार्थ, नेतृत्ववाद, विरोधियों का खात्मा करने की राजनीति के उदय आदि के कारण देश में एक राष्ट्र एक चुनाव की प्रक्रिया को खंडित कर निरंतर चुनाव या मध्यावधि चुनाव को अपनाया गया। जिससे अलोकतांत्रिक, असंवैधानिक गतिविधियों में बढ़ोत्तरी हुई। भारत के राजनीतिक पटल पर पिछले सात दशक से एक राष्ट्र एक चुनाव की चर्चा हो रही है। पंडित नेहरू, लालकृष्ण आडवाणी, अटल बिहारी वाजपेयी आदि ने इसका समर्थन किया था। 1983 में चुनाव आयोग, 1999 में विधि आयोग और अनेक संसदीय समितियों ने भी एक राष्ट्र एक चुनाव का समर्थन किया था। इससे यह ज्ञात होता है कि यह विषय भारत के राजनीतिक गलियारों में शुरू से ही चर्चा में है।

अनेक विद्वान एक राष्ट्र एक चुनाव के समर्थन में कुछ मुद्दों को रखते हैं। उनका कहना है कि इससे सरकार में स्थिरता आएगी जिससे सरकार को अधिक समय मिलेगा। सरकारी मशीनरी को चलाने में, सरकार के सभी मंत्री, प्रशासन आदि का ध्यान जन कल्याण की ओर रहेगा न कि अगले चुनाव पर। सभी सरकारी प्रणालियां विकास से संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन पर ध्यान देंगी। देश से राजनीतिक अस्थिरता की बीमारी हमेशा के लिए खत्म होगी। क्योंकि राजनीतिक अस्थिरता असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक है। राजनीतिक अस्थिरता जनता के जनमत का अनादर करने की खुली आजादी राजनीतिक नेता और उनके दल को देती है। सरकारी अफसर के तबादले की प्रक्रिया खंडित होगी। चुनावी प्रक्रिया के दौरान, नीति को बढ़ावा देने वाले अधिकारियों का एक राज्य से दूसरे राज्य में तबादला किया जाता है। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी स्वीकार किया है कि "एक राष्ट्र एक चुनाव" के माध्यम से इस प्रथा को कम किया जा सकता है।

निरंतर चुनावों के कारण ध्वनि और वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है। चुनावी रैलियों की बढ़ती संख्या से पर्यावरणीय समस्याएं पैदा होती हैं। "एक राष्ट्र एक चुनाव" से पर्यावरणीय प्रदूषण में कमी आने की संभावना है। लगातार चुनावों ने चुनाव आयोग, राजनीतिक दल और उम्मीदवारों के खर्च को बढ़ा दिया है। चुनाव में होने वाला खर्च भ्रष्टाचार के माध्यम से निकाला जाता है। इस कारण चुनाव और भ्रष्टाचार एक समीकरण बन गया है। "एक राष्ट्र एक चुनाव" भ्रष्टाचार को कम करने का एक सही कदम है। "एक राष्ट्र एक चुनाव" के कारण चुनाव पांच साल में एक बार ही होंगे, जिससे मतदाताओं को लुभाने की परिपाटी कम होगी। जैसे कि मतों की खरीददारी, मतदाताओं को पैसे देकर अपने दल या प्रत्याशी को मत करने के लिए बाध्य करना, मंदिर, मस्जिद, मठ के निर्माण के लिए पैसा देना, शराब, खाना आदि देकर मतों को खरीदा जाता है। पैसे की आड़ में राजनेता और राजनीतिक दल अपने अलोकतांत्रिक व्यवहार को लोकतांत्रिक व्यवहार में बदलते हैं। राजनेता और राजनीतिक दलों के इस आर्थिक प्रलोभन में जनता साल में कई बार फंसती है। "एक राष्ट्र एक चुनाव" से जनता भी चुनावी परिपाटी से दूर होकर अपने परिवार, राष्ट्र और समाज के हित के बारे में सोचकर खुद को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाएगी।

"एक राष्ट्र एक चुनाव" का विचार अच्छा है, लेकिन यह व्यवहार्य है या नहीं, इस पर विचार करना होगा। इस विचार का विरोध करने वाले पक्ष का कहना है कि भारत जैसे विशाल जनसंख्या और भौगोलिक विविधता वाले देश में यह विचार सफल नहीं होगा। इस देश की सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक विविधता में यह विचार ठीक नहीं है। राजनीतिक सत्ता का केंद्रीकरण होगा, केंद्र और राज्यों में एक ही राजनीतिक दल सत्ता में आएंगे। राजनीतिक सत्ता की चाबी कुछ लोगों के हाथ में जाएगी। "एक राष्ट्र एक चुनाव" के विचार को वास्तविकता में लाने में अनेक कठिनाइयां हैं। कुछ समस्याएं संवैधानिक हैं और संवैधानिक प्रावधानों में संशोधन करना होगा। इसके लिए आवश्यक जनसमर्थन और बहुमत की आवश्यकता है, जो जुटाना सरकार के लिए बहुत मुश्किल होगा। चुनाव आयोग के पास आवश्यक साधन, कर्मचारी, मशीनरी, पैसा आदि की कमी है। इसके लिए आवश्यक नियोजन और नीति का अभाव है। प्रादेशिक राजनीतिक दल, नए राजनीतिक दल, छोटे राजनीतिक दल, राजनीतिक दलों के राजनीतिक व्यवहार, आचार आदि के लिए यह विचार हानिकारक है। देश की राजनीति में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों का प्रभाव बढ़ेगा। एक देश एक व्यक्ति एक विचार एक देश एक राजनीतिक दल का निर्माण होगा। "एक राष्ट्र एक विचार" से देश की जनता का अनभिज्ञ, अज्ञानी होना एक रोड़ा है। इससे राजनीतिक एकाधिकारशाही का निर्माण होगा, जो भारत जैसे लोकतंत्र के लिए घातक है। "एक राष्ट्र एक चुनाव" का विचार भारत को एकाधिकारशाही की ओर ले जाएगा। एकाधिकारशाही देश को आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र नहीं बना सकती है।

चुनावी प्रक्रिया को लोकतांत्रिक तरीके से चलाने में एक राष्ट्र एक चुनाव एक मुश्किल मुद्दा है। कांग्रेस, क्षेत्रीय राजनीतिक दल, और यहाँ तक कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व का विरोध करने वाले कई राजनीतिक दल, राजनेता, विद्वान, और लोकतंत्र के समर्थक भी इसका विरोध करते हैं। उनका कहना है कि वर्तमान में जिन देशों ने "एक राष्ट्र एक चुनाव" की प्रक्रिया को स्वीकार किया है, उनकी और भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति में बहुत अंतर है। जनसंख्या और भूगोल के मामले में वे सभी राष्ट्र भारत से छोटे हैं। उनकी और भारत की राजनीतिक व्यवस्था में भी अंतर है। लीबिया, उत्तर कोरिया, चीन, जापान, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड आदि राष्ट्रों में "एक राष्ट्र एक चुनाव" की प्रक्रिया लागू है।

उपसंहार

"एक राष्ट्र एक चुनाव" भारत की संपूर्ण राज्य व्यवस्था को प्रभावित करने वाला विचार है। यह देश के सभी वर्गों को प्रभावित कर नई राजनीतिक सोच को जन्म देगा, जो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाली विचारधारा का निर्माण करेगा। इस विचार को समझकर हमें उसके हिसाब से कुछ महत्वपूर्ण संशोधन संविधान में करने होंगे। साथ ही सभी राजनीतिक दलों को अपने राजनीतिक हित को बाजू में रखकर देश हित के बारे में सोचना होगा, तभी इस व्यवस्था का निर्माण होगा।

Section-2
खंड -2

निबंध का शीर्षक: 3. पारंपरिक नैतिकता आधुनिक जीवन का मार्गदर्शन नही कर सकती।

प्रस्तावना

परंपरा लोगों को किसी भी अत्याचार से समझौता करा सकती है, और फैशन उन्हें किसी भी मूर्खता को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकता है।

जॉर्ज बायरन की ये बातें इस शीर्षक पर बिल्कुल सटीक बैठता हैं। भारतीय समाज विकास के आसमान पर रहा है जिसमे कुछ लोग आधुनिक मूल्यों को जल्दी ही प्राप्त कर लिए और कुछ लोग अभी भी परम्परागत मूल्यों के चिपके हुए है। इसके कारण समाज की गतिशीलता में विसंगति देखी जाती है। आधुनिक मूल्य वालो को प्राचीन सोच वाले बिगड़े हुए मानते है, वही प्राचीन वालो को आधुनिक मूल्य वाले लोग पिछड़े हुए मानते है। अब हमे इसी पर विचार करना है कि वर्तमान आधुनिक जीवन में कौन- से मूल्य सही है और कौन- से गलत।

किसी भी समाज, संस्था या देश का संचालन कुछ नियमो के माध्यम से होता है। ये नियम उस समाज के उद्देशो की पूर्ति से जुड़े होते है। हमारा व्यवहार अगर उन नियमो के अनुरूप है जो संगठन के लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक है तो हमे नैतिक समझा जाएगा। वही हमारा व्यवहार अगर उन नियमो के अनुरूप नहीं है या संगठन के लक्ष्यों में बाधा बनता है तो हमे अनैतिक समझा जायेगा। जैसे जैसे समय बदलता है, यह नैतिकता बदलती जाती है। स्थान के अनुसार भी यह बदलती है।

हम हमेशा अपने बीच नैतिक दिशासूचक शब्द सुनते हैं। इस विषय पर विचार करने के लिए नैतिकता क्या है?, हमे समझना होगा। नैतिकता का मतलब है कि एक व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों के प्रति, अपने आस-पास के लोगों के प्रति किस तरह से प्रतिक्रिया करता है। भारत जैसे देश में रीति-रिवाज, नैतिकता, धर्म सभी एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। हम सभी को अपने आस-पास के समाज से इनके बारे में जांच का सामना करना पड़ता है। 21वीं सदी की दुनिया में बहुत सारे आयाम हैं। हमसे पहले की पीढ़ियों ने कई तरह के रीति-रिवाजों का पालन किया है। अच्छे और बुरे की पहचान करना और सही काम करना हमारे माता-पिता और शिक्षकों द्वारा सिखाया जाता है। ये जीवन के सबक वे सालों तक आगे बढ़ाते हैं।

स्कूल और बाद में कॉलेज में नैतिकता के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान पाठ्यक्रम द्वारा विभिन्न प्रारूपों में दिया गया था। लेकिन यह निराशाजनक था कि यह केवल एक बहुत ही स्कोरिंग विषय बनकर रह गया, जो आपके समग्र प्रतिशत को बढ़ाने का एक तरीका था। मैं कभी भी डिज़ाइन किए गए विषयों के महत्व के बारे में इतना सचेत नहीं था। नैतिकता के बारे में मेरी समझ की गहराई मेरे साथ हुए अनुभवों से बनी थी। इसका एक विरोधाभास भी है अभी आपने देखा होगा कि प्रयागराज में लगे महाकुंभ में ईट बाबा अभय सिंह बहुत प्रसिद्ध हुए हैं यदि आपने उनके वक्तव्य को सुना होगा तो आपने एक चीज अनुभव किया होगा कि वह आधुनिकता की खोज पौराणिक व्यवस्थाओं के आधार पर कर रहे हैं जहां एक तरफ आधुनिक विज्ञान सृष्टि की रचना के लिए एक कण को जिम्मेदार मानते हैं वही पौराणिक मान्यता वाले सृष्टि के रचनाकार के रूप में शिव को तथा अन्य धर्मावलंबी अपने-अपने धार्मिक जनक को मानते हैं।

इस गलाकाट दुनिया में हम देखते हैं कि व्यवसाय, सरकारें और अकेले व्यक्ति ऊपरी हाथ पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सत्ता को उनके बीच सबसे बड़ा मूर्ख माना जाता है। बहुराष्ट्रीय निगम उस अतिरिक्त मार्जिन के लिए चूहे की दौड़ में हैं। दूसरों के लिए उनके द्वारा तैयार किए गए जाल को कम नहीं आंका जाता है। लेकिन ऐसी प्रतिस्पर्धी रणनीतियों का गहन अध्ययन किया जाता है और भविष्य के उद्यमियों को व्यापक शिक्षण पाठ्यक्रमों के रूप में सीखने के लिए दिया जाता है। क्या निगम की ईमानदारी पर सवाल उठता है? एक ऐसा निर्णय जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इतने सारे अज्ञात लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है, हजारों नौकरियां दांव पर लग सकती हैं और कई बार प्रभावित लोगों को अपना जीवन समाप्त करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। बचपन से ही हमें सिखाया जाता रहा है कि अपने आस-पास के लोगों को सम्मान दें और उनके साथ दयालुता से पेश आएं। जाति, रंग और लिंग की परवाह किए बिना सभी के साथ समान व्यवहार करें। ये सबक कमजोर पड़ जाते हैं क्योंकि कई सिर्फ़ लिखे हुए पत्र बनकर रह जाते हैं। हमारे पूर्वाग्रह और हमारे आस-पास से प्राप्त व्यक्तिगत राय हावी हो जाती है। हर जीत के साथ हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। हमारे बैंक खाते में हमारे प्रयासों के लिए मासिक वेतन आने से हमारा आंतरिक आत्म संतुष्ट होता है और हमारे बिलों का भुगतान होता है। हम अपने कामों की लहरों को भूल जाते हैं क्योंकि हम अपने करीबी लोगों की खुशी देखते हैं, वे मुस्कुराहटें जो कड़ी मेहनत से कमाए गए पैसे से खरीदी गई थीं।

एक वेश्या को पैसे कमाने के लिए अपना शरीर बेचना पड़ता है। एक वकील अपने मुवक्किल को बचाने के लिए झूठ बोलता है, जिसने बलात्कार का अपराध किया है। एक असंतुष्ट पत्नी अपने पति को धोखा देती है। एक ठग जो लाखों लोगों की मेहनत की कमाई को ठगता है। एक सब्जी विक्रेता जो अपनी उपज को ताजा रखने के लिए कार्बाइड का छिड़काव करता है। ऐसे सरल उदाहरण जो हम अपने आस-पास देखते हैं। एक बच्चे के रूप में मैं उनमें से प्रत्येक को जोरदार "नहीं" कहता। लेकिन मैं कौन होता हूँ न्याय करने वाला। क्या होगा अगर वेश्या के आश्रित हैं जो उसकी एकमात्र आय के कारण भूख से दूर रहते हैं? वकील एक पेशेवर है जो अपने मुवक्किल को उसके अपराध की परवाह किए बिना बचाने के लिए प्रतिबद्ध है। क्या उसे अपनी 9 वर्षीय बेटी के बारे में सोचना चाहिए जो भविष्य में ऐसी स्थिति का सामना कर सकती है? ठग को अपनी ज़रूरतें पूरी करनी थीं, वह स्कूल में कभी भी एक होनहार छात्र नहीं रहा और उसने कई अवसर खो दिए। सब्जी विक्रेता पर बहुत सारे कर्ज हैं। वह अपनी उपज को बर्बाद करने का जोखिम नहीं उठा सकता। जब हम समाचार पत्र पढ़ते हैं तो हम अपने आस-पास की घटनाओं के बारे में संस्करण देखते हैं। लेकिन बंद दरवाजों के पीछे एक कहानी के कई संस्करण होते हैं। हमारे पास उदार सोच रखने की क्षमता होनी चाहिए। आज की पीढ़ी अपने कार्यों के लिए स्पष्टीकरण नहीं देती। समय तेज़ी से बीतता है; हम कई स्थितियों को समझदारी से नहीं समझ पाते। उम्र और अनुभव के साथ समझदारी बढ़ती है। हम अपने कार्यों को कभी भी अपने आस-पास के लोगों द्वारा किए गए कार्यों के रूप में उचित नहीं ठहरा सकते।

उपसंहार

यहाँ मैं यह कहकर अपने निबंध का समापन करता हूँ कि ऐसे निर्णय लेने के लिए साहसी और साहसी होना जो मानदंडों से हटकर हों, कठिन हो सकता है। लेकिन यह समझना चाहिए कि ऐसा न करना समय के साथ न केवल आपको बल्कि कई लोगों को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए अपने नैतिक दिशा-निर्देशों को रीसेट करें। दबाव में न आएँ बल्कि इस दुनिया को उससे बेहतर जगह बनाने की कोशिश करें, जैसा कि आपने इसे विरासत में पाया है।

निबंध का शीर्षक: 4. हमने 76 वें गणतंत्रता पर क्या पाया?

प्रस्तावना

भारत ब्रिटिश पराधीनता से मुक्ति का 75वां महोत्सव मना रहा है। गणतंत्र अपने आप में मन को प्रफुल्लित और उत्साहित कर देने वाला भाव है। गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस में लिखते हैं-"पराधीन सपनेहु सुख नाही'। तुलसीदास का यह वाक्य कितना भी प्रचलित क्यों ना हो, इसका महत्व सदैव रहेगा। गणतंत्र बिना सब व्यर्थ है। भारतीय परंपरा संस्कृति लोकतंत्र को भी परिभाषित करता है। भारतीय संस्कृति से जुड़ा जो दर्शन है, जो उद्दात्त जीवन परंपराएं हैं संविधान उनको एक तरह से व्याख्याित करता है। भारत ने संपूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुंबकम के सूत्र में के साथ अपना परिवार मानने का संदेश दिया है। इस नाते हमारा यह मंथन करना आवश्यक हो जाता है कि गणतंत्र के इस 75 में वर्ष पर हमने क्या पाया क्या खोया?

संविधान लागू होने के बाद के ये 75 वर्ष हमारे युवा गणतंत्र की सर्वांगीण प्रगति के साक्षी हैं। स्वाधीनता के समय और उसके बाद भी देश के बड़े हिस्से में घोर गरीबी और भुखमरी की स्थिति बनी हुई थी। लेकिन, हमारा आत्म-विश्वास कभी डिगा नहीं। हमने ऐसी परिस्थितियों के निर्माण का संकल्प लिया जिनमें सभी को विकास करने का अवसर मिल सके। हमारे किसान भाई-बहनों ने कड़ी मेहनत की और हमारे देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। हमारे मजदूर भाई-बहनों ने अथक परिश्रम करके हमारे infrastructure और manufacturing sector का कायाकल्प कर दिया। उनके शानदार प्रदर्शन के बल पर आज भारतीय अर्थ-व्यवस्था विश्व के आर्थिक परिदृश्य को प्रभावित कर रही है। आज का भारत, अंतर-राष्ट्रीय मंचों पर नेतृत्व की स्थिति हासिल कर रहा है। संविधान में निर्धारित रूपरेखा के बिना यह व्यापक परिवर्तन संभव नहीं हो सकता था।

हाल के वर्षों में, आर्थिक विकास की दर लगातार ऊंची रही है, जिससे हमारे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं, किसानों और मजदूरों के हाथों में अधिक पैसा आया है तथा बड़ी संख्या में लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया है। साहसिक और दूरदर्शी आर्थिक सुधारों के बल पर, आने वाले वर्षों में प्रगति की यह रफ्तार बनी रहेगी। समावेशी विकास, हमारी प्रगति की आधारशिला है, जिससे विकास का लाभ व्यापक स्तर पर अधिक से अधिक देशवासियों तक पहुंचता है। सरकार द्वारा वित्तीय समावेशन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है, इसलिए प्रधानमंत्री जन धन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया और अटल पेंशन योजना जैसी वित्तीय समर्थन योजनाओं का विस्तार किया गया है, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक विभिन्न प्रकार की वित्तीय सहायता पहुंचाई जा सके।
यह भी एक बहुत महत्वपूर्ण बदलाव है कि सरकार ने जन-कल्याण को नई परिभाषा दी है, जिसके अनुसार आवास और पेयजल जैसी बुनियादी जरूरतों को अधिकार माना गया है। वंचित वर्गों के लिए, विशेष रूप से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों की सहायता के लिए सभी प्रयास किए जा रहे हैं। अनुसूचित जातियों के युवाओं के लिए प्री-मैट्रिक और पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्तियां, राष्ट्रीय फ़ेलोशिप, विदेशी छात्रवृत्तियां, छात्रावास और कोचिंग सुविधाएं दी जा रही हैं। प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना द्वारा रोजगार और आमदनी के अवसर उत्पन्न करके अनुसूचित जातियों के लोगों की गरीबी को तेजी से कम किया जा रहा है। अनुसूचित-जनजाति-समुदायों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए विशेष योजनाएं बनाई गई हैं, जिनमें धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान और प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा

अभियान - पीएम-जनमन - शामिल हैं। विमुक्त, घुमंतू और अर्ध घुमंतू समुदायों के लिए 'विकास एवं कल्याण बोर्ड' का गठन किया गया है।

पिछले एक दशक में सड़कों और रेल मार्गों, बंदरगाहों और logistics hubs सहित physical infrastructure के विकास पर बल दिया गया है। इससे एक ऐसा मजबूत आधार विकसित हो गया है जो आने वाले दशकों में विकास को संबल प्रदान करेगा। सरकार ने वित्त के क्षेत्र में जिस तरह से प्रौद्योगिकी का उपयोग किया है, वह एक मिसाल है। डिजिटल भुगतान के विभिन्न विकल्पों के साथ-साथ प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण की प्रणाली ने समावेशन को बढ़ावा दिया है, जिससे बड़ी संख्या में लोगों को formal system में शामिल किया जा सका है। इसके कारण system में अभूतपूर्व पारदर्शिता भी आई है। इस प्रक्रिया में, कुछ वर्षों के दौरान ही हमने एक ऐसा मजबूत digital public infrastructure विकसित कर लिया है जो विश्व की श्रेष्ठतम संरचनाओं में से एक है। Insolvency and Bankruptcy Code जैसे साहसिक उपायों के परिणामस्वरूप बैंकिंग व्यवस्था अब अच्छी स्थिति में आ गई है। इससे Scheduled Commercial बैंकों की Non-Performing Assets में काफी कमी आई है।

वर्ष 1947 में हमने स्वाधीनता प्राप्त कर ली थी, लेकिन औपनिवेशिक मानसिकता के कई अवशेष लंबे समय तक विद्यमान रहे। हाल के दौर में, उस मानसिकता को बदलने के ठोस प्रयास हमें दिखाई दे रहे हैं। ऐसे प्रयासों में - Indian Penal Code, Criminal Procedure Code, और Indian Evidence Act के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम को लागू करने का निर्णय सर्वाधिक उल्लेखनीय है। न्यायशास्त्र की भारतीय परंपराओं पर आधारित इन नए अधिनियमों द्वारा दंड के स्थान पर न्याय प्रदान करने की भावना को आपराधिक न्याय प्रणाली के केंद्र में रखा गया है। इसके अलावा, इन नए कानूनों में महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध अपराधों पर काबू पाने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इतने बड़े पैमाने पर सुधार के लिए साहसपूर्ण दूरदर्शिता की आवश्यकता होती है। देश में चुनावों को एक साथ सम्पन्न कराने के लिए संसद में पेश किया गया विधेयक, एक और ऐसा प्रयास है, जिसके द्वारा सुशासन को नए आयाम दिए जा सकते हैं। 'एक राष्ट्र एक चुनाव' की व्यवस्था से शासन में निरंतरता को बढ़ावा मिल सकता है, नीति-निर्धारण से जुड़ी निष्क्रियता समाप्त की जा सकती है, संसाधनों के अन्यत्र खर्च हो जाने की संभावना कम हो सकती है तथा वित्तीय बोझ को कम किया जा सकता है। इनके अलावा, जन-हित में अनेक अन्य लाभ भी हो सकते हैं।

हमारी सांस्कृतिक विरासत के साथ हमारा जुड़ाव और अधिक गहरा हुआ है। इस समय आयोजित हो रहे प्रयागराज महाकुंभ को उस समृद्ध विरासत की प्रभावी अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। हमारी परंपराओं और रीति-रिवाजों को संरक्षित करने तथा उनमें नई ऊर्जा का संचार करने के लिए संस्कृति के क्षेत्र में अनेक उत्साह-जनक प्रयास किए जा रहे हैं। भारत-भूमि महान भाषाई विविधता से समृद्ध है। इस समृद्धि को संरक्षित करने तथा इस परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए, सरकार ने असमिया, बंगला, मराठी, पालि और प्राकृत को शास्त्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान की है। तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और ओड़िया भाषाएं पहले से ही इस श्रेणी में शामिल हैं। सरकार, अब इन 11 शास्त्रीय भाषाओं में शोध कार्यों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है। गुजरात के वडनगर में भारत के प्रथम Archaeological Experiential Museum का कार्य पूरा होने वाला है। यह Museum एक archaeological site से जुड़ा हुआ है। इस स्थल पर, मनुष्यों की बस्ती होने के लगभग 800 वर्ष ईसा पूर्व के साक्ष्य मिलते हैं। इस संग्रहालय में विभिन्न युगों की, अलग-अलग प्रकार की कला, शिल्प और सांस्कृतिक सामग्री को प्रदर्शित किया जाएगा।

आज की हमारी युवा पीढ़ी कल के भारत का निर्माण करेगी। हमारी युवा पीढ़ी की प्रतिभा शिक्षा के द्वारा ही निखरती है। इसीलिए, सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में निवेश को बढ़ाया है तथा शिक्षा से संबंधित प्रत्येक मानक में सुधार के लिए समग्र प्रयास किए हैं। अब तक के परिणाम उत्साहवर्धक रहे हैं। पिछले दशक में, शिक्षा की गुणवत्ता, भौतिक अवसंरचना तथा डिजिटल समावेशन के आयामों में व्यापक बदलाव आया है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षण- माध्यम के रूप में, क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। विद्यार्थियों के प्रदर्शन में आशा के अनुरूप उल्लेखनीय सुधार हुआ है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि महिला शिक्षकों ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले दशक के दौरान नियुक्त शिक्षकों में महिलाओं की भागीदारी 60 प्रतिशत से अधिक है।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास का विस्तार तथा इन्हें मुख्यधारा में शामिल किया जाना स्वागत योग्य उपलब्धि है। इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए अब हमारे युवाओं को योजनाबद्ध तरीके से Corporate Sector में internship के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। स्कूल स्तर की शिक्षा का आधार मजबूत बनाने के साथ-साथ, हमारे देश में विद्यार्जन की विभिन्न शाखाओं, विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल की जा रही हैं। Intellectual Property Filings की दृष्टि से भारत का विश्व में छठा स्थान है। Global Innovation Index में भारत की ranking लगातार बेहतर हुई है। वर्ष 2020 में भारत, 48वें स्थान पर था। स्थिति में सुधार करते हुए, वर्ष 2024 में, भारत 39वें स्थान पर आ गया है। बढ़ते आत्मविश्वास के साथ, हम अनेक प्रयासों के बल पर अत्याधुनिक अनुसंधान में अपनी भागीदारी बढ़ा रहे हैं। National Quantum Mission का उद्देश्य प्रौद्योगिकी के इस नए क्षेत्र में एक जीवंत और नवीन eco-system को विकसित करना है। एक अन्य उल्लेखनीय शुरुआत National Mission on Interdisciplinary Cyber Physical System से सम्बद्ध है। इसके तहत Artificial Intelligence, Machine Learning, Robotics और Cyber Security जैसी अनेक उन्नत प्रौद्योगिकियों पर कार्य करने की योजना है। इन प्रौद्योगिकियों को, कुछ समय पहले तक futuristic समझा जाता था लेकिन अब वे तेजी से हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनती जा रही हैं।

Genome India Project प्रकृति के रहस्यों की खोज का एक रोचक अभियान तो है ही, यह भारतीय विज्ञान के इतिहास में एक निर्णायक अध्याय भी है। इसके प्रमुख कार्यक्रम के तहत, इसी महीने 10 हजार भारतीयों की Genome Sequencing को अनुसंधान के लिए उपलब्ध कराया गया है। ज्ञान के नए आयामों को खोलने वाली यह परियोजना bio-technology research में नए मार्ग प्रशस्त करेगी तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को भी मजबूत बनाएगी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने हाल के वर्षों में अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में बहुत बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। इस महीने, ISRO ने अपने सफल Space Docking Experiment से देश को एक बार फिर गौरवान्वित किया है। भारत अब विश्व का चौथा देश बन गया है जिसके पास यह क्षमता उपलब्ध है।

एक राष्ट्र के रूप में हमारा बढ़ता आत्मविश्वास खेलों के क्षेत्र में भी दिखाई देता है। हमारे खिलाड़ियों ने सफलता के प्रभावशाली अध्याय रचे हैं। पिछले वर्ष, हमारे खिलाड़ियों ने ओलंपिक खेलों में अच्छा प्रदर्शन किया है। पैरालिंपिक खेलों में, हमने अपना अब तक का सबसे बड़ा दल भेजा, जिसने अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय प्रगति के बल पर हम अपना सिर ऊंचा करके भविष्य की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। हमारे युवा, विशेषकर हमारी बेटियां देश के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण

करेंगी। जब हम अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मना रहे होंगे, तब के भारत का उज्ज्वल भविष्य हमारे युवाओं के सपनों में आकार ले रहा है। और जब आज के बच्चे वर्ष 2050 की 26 जनवरी के दिन राष्ट्र-ध्वज को सलामी दे रहे होंगे, तब वे अपनी अगली पीढ़ी को यह बता रहे होंगे कि हमारे देश की गौरव यात्रा, हमारे अतुलनीय संविधान से प्राप्त मार्गदर्शन के बिना संभव न हुई होती।

हमारी भावी पीढ़ियां विश्व-पटल पर स्वाधीन भारत के आदर्शों को चरितार्थ करेंगी। यहाँ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के एक संदेश का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता हैं:

"यदि स्वराज्य का अभिप्राय हमें सभ्य बनाना और हमारी सभ्यता को शुद्ध और स्थायी बनाना नहीं है, तो इसकी कोई कीमत नहीं है। हमारी सभ्यता का सार यह है कि अपने सभी मामलों में, चाहे वे राजनीतिक हों या निजी, नैतिकता को सर्वोत्तम स्थान दिया जाए।"

हम सभी को आज के दिन हम गांधीजी के सपनों को साकार करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराना चाहिए। सत्य और अहिंसा के उनके आदर्श विश्व-समुदाय के लिए प्रासंगिक बने रहेंगे। उन्होंने हमें यह सीख भी दी थी कि अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सच तो यह है कि कर्तव्य ही अधिकार का वास्तविक स्रोत है। सभी के प्रति करुणा के बारे में उनकी शिक्षा को भी हम याद करें। वे कहते थे कि हमें केवल मनुष्यों के प्रति ही नहीं बल्कि अपने आस-पास के पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, नदियों और पहाड़ों के प्रति भी संवेदना का भाव रखना चाहिए।

उपसंहार

हम सभी का कर्तव्य है कि जलवायु परिवर्तन के वैश्विक संकट का सामना करने के प्रयासों में अपना योगदान अवश्य दें। इस संदर्भ में दो अनुकरणीय प्रयास किए गए हैं। विश्व स्तर पर भारत Mission Lifestyle for Environment नामक एक जन-आंदोलन का नेतृत्व कर रहा है। इसका उद्देश्य पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन में व्यक्तियों और समुदायों को अधिक सक्रिय होने के लिए प्रेरित करना है। पिछले वर्ष, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर, हमने अपनी मातृ-शक्ति के साथ-साथ जीवन-दायिनी प्रकृति की पोषण शक्ति के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए, 'एक पेड़ मां के नाम' के संदेश के साथ एक अनूठा अभियान शुरू किया था। इस अभियान का 80 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य समय-सीमा से पहले ही पूरा कर लिया गया। विश्व-समुदाय, ऐसे अभिनव प्रयासों से सीख ले सकता है। लोग, ऐसे प्रयासों को, स्वयं के आंदोलन के रूप में अपना सकते हैं।

Section-3
खंड -3

निबंध का शीर्षक: 5. अड़कल खेती तड़कल गाइ, दइव करसु त मुंह में जाइ

प्रस्तावना

यह कहावत भारतीय किसानों की स्थिति का सटीक वर्णन करती है। इसका अर्थ है कि खेती अनिश्चित है, मवेशी कमजोर हैं, और यदि भगवान की कृपा हो तो ही भोजन मिलेगा। भारत में, कृषि मानसून पर बहुत अधिक निर्भर है। मानसून की अनियमितता के कारण, किसानों को अक्सर सूखे या बाढ़ का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, किसानों के पास हमेशा आधुनिक तकनीक और उपकरणों तक पहुंच नहीं होती है, जिससे उनकी उत्पादकता कम होती है। इन सब कारणों से, किसानों की आय बहुत कम होती है। वे अक्सर

कर्ज में डूबे रहते हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण करने में असमर्थ होते हैं। यह स्थिति किसानों के लिए बहुत ही निराशाजनक है। उन्हें लगता है कि उनकी मेहनत का कोई फल नहीं है। वे अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं।

यह कहावत दो भागों में विभाजित है:

1. **"अड़कल खेती तड़कल गाइ"** - यदि हम केवल अटकलों के आधार पर खेती करें, तो हमें झटपट (तड़कल) गाय (फल) भी मिल सकती है या रुकी हुई खेती से अन्न भाग्य से ही मिलता हैं, लेकिन यह वास्तविकता से परे है। वास्तविक जीवन में खेती हो या कोई भी कार्य, बिना योजना और परिश्रम के अच्छा परिणाम संभव नहीं।
2. **"दइव करसु त मुंह में जाइ"** - इसका अर्थ है कि यदि भाग्य अनुकूल रहा तो सफलता अपने आप हमारे मुंह में आ जाएगी। लेकिन यह केवल कल्पना मात्र है, क्योंकि बिना कर्म के भाग्य भी हमारा साथ नहीं देता।

मानव जीवन में परिश्रम और संकल्प की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो व्यक्ति केवल भाग्य के भरोसे रहता है, वह जीवन में अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। यह कहावत हमें यह सिखाती है कि केवल अटकलें लगाने या भाग्य के भरोसे रहने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता, बल्कि सफलता के लिए निरंतर प्रयास करना आवश्यक है। मनुष्य के जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम और संकल्प की अहम भूमिका होती है। इतिहास गवाह है कि जो लोग केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं, वे जीवन में असफल हो जाते हैं, जबकि जो लोग कठिन परिश्रम और संकल्प के साथ आगे बढ़ते हैं, वे अपनी मंज़िल तक अवश्य पहुंचते हैं। भाग्य को मानने वाले लोग अक्सर यह सोचते हैं कि उनकी किस्मत ही उनके जीवन की दिशा तय करेगी। वे बिना प्रयास किए सफलता की आशा रखते हैं, लेकिन ऐसा कभी नहीं होता। उदाहरण के लिए, यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में बिना पढ़ाई किए सिर्फ भाग्य के सहारे अच्छे अंक प्राप्त करने की उम्मीद करे, तो उसकी सफलता की संभावना बहुत कम होती है। दूसरी ओर, जो विद्यार्थी मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ पढ़ाई करता है, वह निश्चित रूप से अच्छे अंक प्राप्त करता है।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" - भगवद गीता का यह श्लोक हमें सिखाता है कि हमें अपने कर्म करते रहना चाहिए और फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना ही महत्वपूर्ण है। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं, जहां लोगों ने अपनी मेहनत के बल पर असंभव को भी संभव कर दिखाया। अब्राहम लिंकन ने कई असफलताओं के बावजूद अमेरिका के राष्ट्रपति पद तक का सफर तय किया। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक साधारण परिवार से आते थे, लेकिन अपनी मेहनत और संकल्प के बल पर भारत के मिसाइल मैन और राष्ट्रपति बने। यदि व्यक्ति के भीतर कुछ कर गुजरने का संकल्प हो, तो कोई भी कठिनाई उसे रोक नहीं सकती। महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में विजय प्राप्त की। थॉमस एडिसन ने हजारों बार असफल होने के बाद भी हार नहीं मानी और अंततः बल्ब का आविष्कार कर दिया। जो लोग मेहनत और संकल्प के साथ आगे बढ़ते हैं, वे आत्मनिर्भर बनते हैं। वे अपनी सफलता का निर्माण स्वयं करते हैं और समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बनते हैं। भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कठिन परिस्थितियों के बावजूद शिक्षा ग्रहण की और देश को एक सशक्त संविधान दिया। यह उनकी मेहनत और दृढ़ संकल्प का ही परिणाम था। आज के समय में भी यह कहावत उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी पहले थी। कुछ लोग जीवन में मेहनत करने के बजाय भाग्य, संयोग और चमत्कारों पर अधिक विश्वास करते हैं। आज के समय में भी यह कहावत **"अड़कल खेती तड़कल गाइ, दइव करसु त मुंह में जाइ"** उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी पहले थी। आधुनिक युग में भी कई लोग मेहनत करने के बजाय भाग्य, संयोग और चमत्कारों पर अधिक विश्वास करते हैं। वे यह सोचते हैं कि बिना किसी प्रयास के उन्हें सफलता मिल जाएगी, लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।

आज भी कई विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी करने के बजाय किस्मत के भरोसे बैठे रहते हैं। वे सोचते हैं कि सिर्फ अच्छे नंबरों की प्रार्थना करने या नकल करने से वे सफल हो जाएंगे। लेकिन जो विद्यार्थी मेहनत करते हैं, वे ही अच्छे अंक प्राप्त करते हैं और अपने करियर में आगे बढ़ते हैं।

- उदाहरण: अगर कोई छात्र पूरे साल मेहनत से पढ़ाई करता है, तो उसके अच्छे अंक आने की संभावना अधिक होगी। लेकिन जो छात्र केवल भाग्य के भरोसे परीक्षा देने जाएगा, उसकी सफलता संदिग्ध होगी।

कुछ लोग सोचते हैं कि वे बिना परिश्रम किए अमीर बन सकते हैं। वे लॉटरी, सट्टा, या त्वरित धन कमाने की योजनाओं में विश्वास रखते हैं। लेकिन इतिहास गवाह है कि जो लोग मेहनत और संकल्प के साथ कार्य करते हैं, वही असली सफलता प्राप्त करते हैं।

- उदाहरण: रिलायंस इंडस्ट्रीज़ के संस्थापक धीरूभाई अंबानी ने अपनी मेहनत और दूरदृष्टि से एक छोटे व्यवसाय को एक विशाल कंपनी में बदल दिया। अगर वे केवल भाग्य के भरोसे रहते, तो यह संभव नहीं होता।

कई लोग अपने जीवन में सुधार लाने के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं करते और केवल संयोग या चमत्कार की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

- उदाहरण: अगर कोई व्यक्ति स्वस्थ जीवन चाहता है, लेकिन वह केवल प्रार्थना करता है और व्यायाम या संतुलित आहार नहीं लेता, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता। अच्छे स्वास्थ्य के लिए परिश्रम करना आवश्यक है।

आज की दुनिया में तकनीकी प्रगति और वैज्ञानिक आविष्कार मेहनत और दृढ़ संकल्प के कारण संभव हुए हैं। यदि वैज्ञानिक और शोधकर्ता केवल किस्मत के भरोसे बैठ जाते, तो कोई नई खोज नहीं हो पाती।

- उदाहरण: थॉमस एडिसन ने 1000 से अधिक असफल प्रयोगों के बाद बल्ब का आविष्कार किया। अगर वे भाग्य के भरोसे रहते, तो यह संभव नहीं होता।

उपसंहार

कुल मिलाकर, यह कहावत हमें जीवन में कर्मठ बनने और परिश्रम पर विश्वास रखने की प्रेरणा देती है। **"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।"** अर्थात् उठो, जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक प्रयास करते रहो। केवल भाग्य पर निर्भर रहने वाले लोग जीवन में पिछड़ जाते हैं, जबकि मेहनती लोग अपने परिश्रम से सफलता प्राप्त करते हैं। इसलिए, हमें कर्मशील बनकर अपने भविष्य को स्वयं संवारना चाहिए।

निबंध का शीर्षक: 6. "लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान, ममला बिगरे सांझ बिहान"

प्रस्तावना

यह कहावत समाज में निर्णय लेने की सही समय पर आवश्यकता और अनुभव के महत्व को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि यदि युवा अनुभवहीन और अधीर हो और बुज़ुर्ग निर्णय लेने में देर करें, तो कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता। सही समय पर सही निर्णय लेना आवश्यक होता है, अन्यथा परिस्थितियाँ बिगड़ सकती हैं।
इस कहावत को तीन भागों में समझा जा सकता है:

1. "लरिका ठाकुर" - यदि कोई युवा (लड़का) राजा या नेता बन जाए, लेकिन उसमें अनुभव और धैर्य की कमी हो, तो वह गलत निर्णय ले सकता है, जिससे शासन व्यवस्था या कार्य प्रणाली प्रभावित हो सकती है।
2. "बूढ़ दिवान" - यदि किसी राज्य या संस्था का सलाहकार बहुत बुज़ुर्ग हो और वह निर्णय लेने में बहुत देर करे, तो परिस्थितियाँ हाथ से निकल सकती हैं।

3. "ममला बिगरे सांझ बिहान" - यदि किसी मामले को समय पर नहीं सुलझाया जाए, तो सुबह से शाम होते-होते वह और बिगड़ सकता है, यानी देरी करने से समस्या और गंभीर हो जाती है।

इसका सीधा अर्थ यह है कि "अनुभव और ऊर्जा का सही संतुलन आवश्यक है, अन्यथा निर्णय लेने में चूक होने से स्थिति बिगड़ सकती है।" यह कथन अनुभव और ऊर्जा के बीच संतुलन के महत्व पर प्रकाश डालता है। अनुभव हमें ज्ञान और कौशल प्रदान करता है, जबकि ऊर्जा हमें कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है। जब अनुभव और ऊर्जा का सही संतुलन होता है, तो हम सबसे अच्छे निर्णय लेने और सबसे प्रभावी कार्रवाई करने में सक्षम होते हैं।

अनुभव के बिना, ऊर्जा व्यर्थ हो सकती है। एक युवा व्यक्ति जिसके पास बहुत ऊर्जा है, वह बिना अनुभव के गलतियाँ कर सकता है या अप्रभावी निर्णय ले सकता है। दूसरी ओर, अनुभव के बिना ऊर्जा के, हम अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। एक बूढ़ा व्यक्ति जिसके पास बहुत अनुभव है, वह ऊर्जा की कमी के कारण कार्यों को पूरा करने में असमर्थ हो सकता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम अनुभव और ऊर्जा दोनों को विकसित करें। अनुभव प्राप्त करने के लिए, हमें सीखने और अपने अनुभवों से सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऊर्जा विकसित करने के लिए, हमें अपने लक्ष्यों के बारे में भावुक होना चाहिए और कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित होना चाहिए। जब हमारे पास अनुभव और ऊर्जा का सही संतुलन होता है, तो हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने की अधिक संभावना रखते हैं।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि अनुभव और ऊर्जा का संतुलन कैसे महत्वपूर्ण है:

- एक युवा एथलीट जिसके पास बहुत ऊर्जा है, वह बिना अनुभव के गलतियाँ कर सकता है और चोटिल हो सकता है। एक अनुभवी एथलीट जानता है कि अपनी ऊर्जा को कैसे प्रबंधित करना है और चोट से कैसे बचना है।
- एक युवा उद्यमी जिसके पास बहुत ऊर्जा है, वह बिना अनुभव के एक असफल व्यवसाय शुरू कर सकता है। एक अनुभवी उद्यमी जानता है कि एक सफल व्यवसाय कैसे शुरू और संचालित किया जाए।
- एक युवा नेता जिसके पास बहुत ऊर्जा है, वह बिना अनुभव के गलत निर्णय ले सकता है। एक अनुभवी नेता जानता है कि अपने लोगों को कैसे प्रेरित और प्रबंधित करना है।

यह कथन हमें याद दिलाता है कि हमें अपने जीवन में अनुभव और ऊर्जा दोनों को विकसित करने की आवश्यकता है। जब हम इन दोनों गुणों को विकसित करते हैं, तो हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने की अधिक संभावना रखते हैं।

यह लोकोक्ति आधुनिक संदर्भ में भी प्रासंगिक हैं। चाहे राजनीति हो, व्यापार हो, शिक्षा हो या कोई अन्य क्षेत्र, सही समय पर सही निर्णय लेना बहुत जरूरी है।

(i) राजनीति और शासन में

- अगर कोई युवा नेता अधीर होकर बिना सोचे-समझे निर्णय लेता है, तो देश या समाज को नुकसान हो सकता है।
- यदि वरिष्ठ नेता जरूरत से ज्यादा सोच-विचार में समय बर्बाद करें, तो समस्या और बढ़ सकती है।
- उदाहरण: किसी आपदा के समय सरकार द्वारा समय पर निर्णय नहीं लेने से लोगों को भारी नुकसान हो सकता है।

(ii) व्यापार और उद्योग में

- अगर कोई नया उद्यमी बिना अनुभव के गलत निर्णय ले, तो उसका व्यापार असफल हो सकता है।
- अगर कोई बुजुर्ग व्यापारी नए बदलावों को स्वीकार करने में देर करे, तो उसका व्यापार पीछे रह सकता है।

- उदाहरण: नोकिया ने नई तकनीक अपनाने में देरी की, जिससे वह मोबाइल उद्योग में पिछड़ गया।

(iii) व्यक्तिगत जीवन में

- अगर कोई युवा जल्दबाजी में करियर या शादी का गलत फैसला ले ले, तो उसका भविष्य प्रभावित हो सकता है।
- अगर कोई व्यक्ति स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को टालता रहे, तो बाद में गंभीर बीमारी हो सकती है।

अनुभव और ऊर्जा का सही संतुलन आवश्यक है, अन्यथा निर्णय लेने में चूक होने से स्थिति बिगड़ सकती है। मनुष्य के जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सही निर्णय लेना अत्यंत आवश्यक होता है। निर्णय लेने की क्षमता मुख्य रूप से दो तत्वों पर निर्भर करती है–अनुभव और ऊर्जा। अनुभव से व्यक्ति को सही और गलत की समझ मिलती है, जबकि ऊर्जा उसे कार्य करने की शक्ति और उत्साह प्रदान करती है। यदि इन दोनों का संतुलन न हो, तो निर्णय लेने में गलती हो सकती है, जिससे परिस्थितियाँ बिगड़ सकती हैं। अतः अनुभव और ऊर्जा का सही संतुलन बनाए रखना सफलता के लिए अनिवार्य है। अनुभव जीवन का सबसे बड़ा शिक्षक होता है। यह हमें अतीत की गलतियों से सीखने, जोखिमों को समझने और सही निर्णय लेने में सहायता करता है। एक अनुभवी डॉक्टर बीमारी का सही निदान कर सकता है। एक अनुभवी व्यापारी बाजार की स्थिति को बेहतर समझ सकता है। राजनीति में अनुभवी नेता कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित निर्णय ले सकता है।

ऊर्जा का अर्थ है उत्साह, नयापन और कुछ नया करने की क्षमता। युवा पीढ़ी में नई सोच और बदलाव लाने की शक्ति होती है। युवा वैज्ञानिक नई खोजों में अग्रणी होते हैं, युवा खिलाड़ी अपने जोश से सफलता प्राप्त करते हैं, नए उद्यमी नई सोच से बड़े-बड़े व्यापार खड़े कर सकते हैं। लेकिन यदि केवल अनुभव हो और ऊर्जा न हो, तो नया कुछ नहीं हो सकता। वहीं, यदि केवल ऊर्जा हो और अनुभव का अभाव हो, तो गलत निर्णय लिए जा सकते हैं। अगर कोई युवा नेता जल्दबाजी में फैसले ले, तो उससे देश को नुकसान हो सकता है। वहीं, यदि कोई बुजुर्ग नेता निर्णय लेने में बहुत देर करे, तो समस्या और बढ़ सकती है। उदाहरण: महात्मा गांधी ने अनुभव और युवाओं की ऊर्जा दोनों को साथ लेकर स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। उनकी दूरदर्शिता और युवाओं के जोश के कारण ही भारत स्वतंत्र हुआ। व्यवसाय में नई सोच और अनुभव दोनों की जरूरत होती है। उदाहरण: टाटा समूह में अनुभवी लोगों की सोच और युवा उद्यमियों की ऊर्जा का मेल देखने को मिलता है। यदि केवल अनुभवी लोग हों और युवा न हों, तो नया बदलाव नहीं आ सकता। यदि केवल युवा हों और कोई अनुभवी मार्गदर्शन न करे, तो गलत निर्णय होने की संभावना बढ़ जाती है। यदि कोई युवा जल्दबाजी में करियर या विवाह का गलत निर्णय ले ले, तो उसका भविष्य प्रभावित हो सकता है। यदि कोई बुजुर्ग जीवन में किसी महत्वपूर्ण निर्णय को लेने में बहुत अधिक सोच-विचार करता रहे, तो अवसर हाथ से निकल सकते हैं।
यदि अनुभव और ऊर्जा में संतुलन न हो, तो कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। यदि कोई व्यक्ति केवल अनुभव के आधार पर काम करे और नए प्रयोग न करे, तो वह समय से पीछे रह जाएगा। यदि कोई व्यक्ति केवल जोश में आकर निर्णय ले और अनुभव की कमी के कारण सही योजना न बनाए, तो असफलता मिल सकती है।

उपसंहार

"लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान, ममला बिगरे सांझ बिहान" कहावत हमें यह सिखाती है कि बिना अनुभव और धैर्य के निर्णय लेना गलत हो सकता है, वहीं जरूरत से ज्यादा सोचने और निर्णय लेने में देरी करने से भी स्थितियाँ बिगड़ सकती हैं। इसलिए, जीवन में सफलता के लिए संतुलित दृष्टिकोण, अनुभव और समय पर निर्णय लेने की क्षमता बहुत जरूरी है। अनुभव और ऊर्जा दोनों ही सफलता के लिए आवश्यक हैं। यदि केवल अनुभव हो और ऊर्जा न हो, तो नयापन नहीं आ सकता। यदि केवल ऊर्जा हो और अनुभव न हो, तो गलत निर्णय लिए जा सकते हैं। इसलिए, दोनों का सही संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। यही संतुलन सही निर्णय

लेने और जीवन में सफलता प्राप्त करने की कुंजी है। "अनुभव से बुद्धिमत्ता आती है, और ऊर्जा से परिवर्तन संभव होता है। सही संतुलन ही सफलता की पहचान है।"